वेटेरिनरी विवि में सरसों अनुसंधान केंद्र के कार्यक्रम में पुस्तिका का विमोचन करते भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ. जेएस संधू। साथ में हैं कुलपति प्रो. केएमएल पाठक व अन्य। जागरण

खेतों तक पहुंचें कृषि अनुसंधानों के परिणाम

- सरसों उत्पादन बढ़ाने को राज्यवार रणनीति बनाने की वकालत
- जलवायु परिवर्तन के दौर में जीएम तकनीक समय की जरूरत

जागरण संवाददाता, मथुरा: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. जेएस संधु ने कहा कि अनुसंधान संस्थाओं द्वारा कृषि की विभिन्न परिस्थितियों के लिए तकनीक का विकास किया गया है। इन तकनीकों का समय पर किसानों के पास पहुंचना महत्वपूर्ण है। उन्हें नए रोग एवं प्रतिकूल मौसम अवरोधी किस्मों को अपनाने की आवश्यक्ता है।

डा. संधु वेटरिनरी विश्वविद्यालय के किसान भवन आडिटोरियम में सरसों अनुसंधान निदेशालय, (भरतपुर) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 23 वीं कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि परंपरागत क्षेत्रों के अतिरिक्त पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में गैर परंपरागत क्षेत्रों विशेष कर धान के बाद खाली रहने वाले खेतों में लगाए गए सरसों के प्रदर्शनों में अच्छी उपज प्राप्त हुई है। इन क्षेत्रों में धान के बाद राई सरसों की खेती के लिए किसानों को अग्रसर करना होगा। उन्होंने कहा जलवायु परिवर्तन के दौर में समस्याओं के निदान के लिए जीएम तकनीक को प्रयोग में लाने की आवश्यकता है, लेकिन जीएम फसलों को अच्छी तरह परीक्षण करने के बाद ही किसानों तक पहुंचाया जाए।

कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक डा. बीबी सिंह ने कहा कि वर्तमान में राई व सरसों का उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक उपज वाली हाईब्रिड किस्मों का विकास किया जाना चाहिए।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डा. धीरज सिंह ने राई-सरसों अनुसंधान की गत वर्ष की उपलब्धियों के बारे में चर्चा की। विवि के कुलपति डा. केएमएल पाठक ने भी कार्यशाला को संबोधित किया। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से आए करीब 200 वैज्ञानिक भाग लिया। इस अवसर पर 4 तकनीकी पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

दैनिक जागरण 7 अगस्त 2016

वेटरिनरी में अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की कार्यशाला

खेतों तक पहुंचे कृषि अनुसंधान

मथुरा | हिन्दुस्तान संवाद

आयोजन

- सरसों उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्यवार रणनीति बने
- जलवायु परिवर्तन के दौर में जीएम तकनीक जरूरी

भारतीय कृषि अनसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जेएस संधू ने कहा कि अनुसंधान संस्थाओं द्वारा कृषि की विभिन्न परिस्थितियों के लिए तकनीकी का विकास किया गया है। किसानों को पुरानी किस्मों के बजाय नई रोग एवं प्रतिकूल मौसम अवरोधी किस्मों को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कृषि अनुसंधान खेतों तक पहुंचने चाहिए।

डा. संधू शुक्रवार को वेटरिनरी विश्वविद्यालय के किसान भवन में सरसों अनुसंधान निदेशालय (भरतपुर) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 23वीं कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश में दालों के साथ-साथ तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है, इसलिए राई-सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. बीबी सिंह, सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह, वेटरिनरी विवि के कुलपति डॉ. केएम एल पाठक ने भी विचार व्यक्त किए। वेटरिनरी के निदेशक प्रसार डॉ. सर्वजीत ने वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

शुक्रवार को पं. दीनदयाल उपाध्याय वेटरिनरी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में पुस्तक का विमोचन करते भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व वेटरिनरी के अधिकारी।

चार पुस्तकों का विमोचन हुआ: वेटरिनरी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के करीब 200 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं, जो कि अपने-अपने राज्यों में किए गए सरसों अनुसंधानों की चर्चा करेंगे। साथ ही आगामी वर्ष की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। इस अवसर पर चार तकनीकी पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

हिन्दुस्तान 7 अगस्त 2016

राई-सरसों अनुसंधान पर हुई कार्यशाला

'उत्पादन बढ़ाना हो किसानों का लक्ष्य'

दो सौ वैज्ञानिक ले रहे भाग

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर की ओर से वेटरिनरी विश्वविद्यालय मथुरा के किसान भवन ऑडिटोरियम में भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जेएस सन्धू की मौजूदगी में हुआ। उन्होंने कहा कि कृषि की तकनीकियों का विकास किया गया है, जो समय पर किसानों तक पहुंची चाहिए। इसलिए किसानों को पुरानी किस्मों की बजाए नई रोग एवं प्रतिकूल मौसम की किस्मों को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश में दालों के साथ तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई-सरसों का विकास, क्षेत्रफल व उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों और किसानों का लक्ष्य होना चाहिए।

भरतपुर में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ करते अतिथि।

डॉ. सन्धू ने राई-सरसों फसल में जैविक एवं अजैविक कारक विशेषकर आरोवें की खरपतवार व तना गलन आदि रोगों के प्रबंधन की प्रभावी तकनीकों को विकसित करने पर विचार रखे। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि उपज में अंतर के लिए जिम्मेदार कारकों को चिन्हित करके उसी के अनुरूप अनुसंधान की प्राथमिकता निर्धारित करें।

कार्यशाला में परिषद् के सहायक महानिदेशक डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई-सरसों का उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक उपज वाली हाईब्रिड किस्मों का विकास होना चाहिए। उन्होंने उन्नत किस्मों से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए संबंधित प्रभावी शस्य तननीकों के विकास की जरूरत पर जोर दिया।

इस दौरान सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने राई-सरसों अनुसंधान की गत वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी देकर भविष्य की अनुसंधान योजनाओं पर चर्चा की। कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से करीब दो सौ वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

राजस्थान पत्रिका 6 अगस्त 2016

कार्यशाला का आयोजन 7 को मथुरा में

भरतपुर (निस)। सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुसंधान परियोजना की 23वीं कार्यशाला का आयोजन 5 से लेकर 7 अगस्त को उ० प्र० पण्डित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान (दुवासु), मथुरा में किया जायेगा। इस कार्यशाला का उदघाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जे. एस. सन्धू द्वारा किया जायेगा तथा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. के. एम. एल पाठक कार्यशाला की अध्यक्षता करेंगे।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने बताया कि इस कार्यशाला में निदेशालय के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अर्न्तगत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों के करीब 200 राई-सरसों वैज्ञानिक भाग लेंगे। हमारें देश में राई-सरसों रबी की प्रमुख तिलहनी फसल है जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था में एक विशेष स्थान है। वर्तमान में तिलहनी फसलों में राई-सरसों का खाद्य तेलों में योगदान लगभग 33 प्रतिशत है। इस अवसर पर तोरिया, राई एवं सरसों फसल कि अखिल भारतीय परियोजना कि 2015-16 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जायेगी। इस कार्यशाला में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकि हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिन्हित किये जाने के साथ मुख्य शोध बिन्दुओं पर क्रमवार चर्चा होगी। कार्यषाला में राई-सरसों में बीमारियों आदि पर गहन विचार विमर्श कर विभिन्न राज्यों के लिए वहाँ की जलवायु, भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुये राई-सरसों के उत्पादन को बढाने की विस्तृत कार्ययोजना भी तैयार की जायेगी।

राष्ट्रदूत 5 अगस्त 2016

कृषि अनुसंधानों के परिणाम खेतों तक पहुँचेः डॉ. जे.एस.सन्धू

सरसों के उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्यवार रणनीति बनानी चाहिए

मथुरा। भारतीय कृषि अनसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जे.एस.सन्धू ने कहा कि अनुसंधान संस्थाओं द्वारा कृषि की विभिन्न परिस्थितियों के लिए तकनीकियों का विकास किया गया है। इन तकनीकों का समय पर किसानों के पास पहुंचना महत्वपूर्ण है।लेकिन जानकारी के अभाव और बीजों की उपलब्धता पूरी न होने के कारण किसान अभी भी पुरानी किस्में काम में ले रहे हैं। इस लिए किसानों द्वारा पुरानी किस्मों की बजाय नई रोग एवं प्रतिकूल मौसम अवरोधी किस्मों को अपनाने की आवश्यक्ता है। उन्होंने कहा कि देश में दालों के साथ साथ तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। किसानों की मेहनत से देश को खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता मिली और आज देश इनका निर्यात भी करता है।किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर तिलहनों का उत्पादन भी बढाना होगा ताकि उसमें भी आत्मनिर्भरता प्राप्त हो सके। डॉ. जे.एस. संधू सोमवार को वेटरिनरी विश्वविद्यालय मथुरा के किसान भवन आडिटोरियाम में सरसों अनुसंधान निदेशालय, (भरतपुर) द्वारा आयोजित परियोजना की 23 वीं कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परम्परागत क्षेत्रों के अतिरिक्त पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में गैर परम्परागत क्षेत्रों विशेष पर धान के बाद खाली रहने वाले खेतों में लगाए गए सरसों के प्रदर्शनों में अच्छी उपज प्राप्त हुई है। इस लिए इन क्षेत्रों में धान के बाद राई सरसों की खेती के लिए किसानों को अग्रसर करना होगा। उन्होंने कहा कि विगत दो वर्षों में मानसून फसलों के अनुकूल नहीं रहा लेकिन विपरीत जलवायु, तकनीकों के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिकों के लिए एक उपयुक्त अवसर होता है।

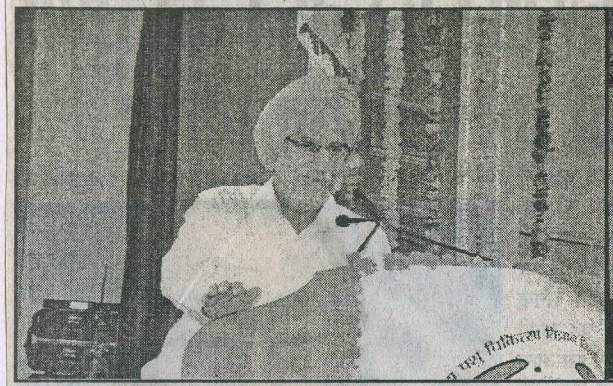

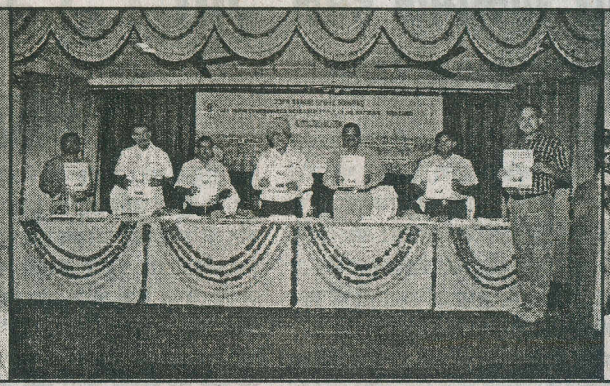

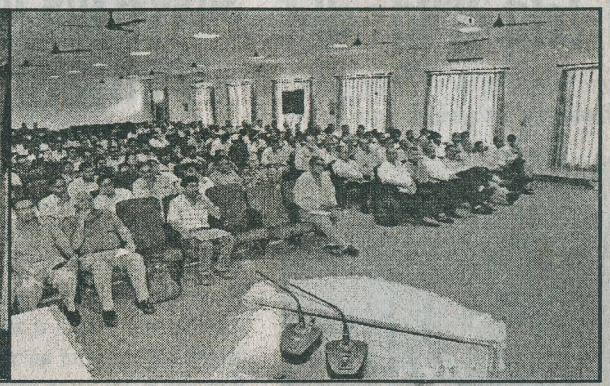

जलवायु परिवर्तन के दौर में जीएम तकनीक समय की जरूरत

मथुरा। डॉ. संधु ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में समस्याओं के निदान के लिए हमें नवीन तकनीकों जैसे जीएम तकनीक को प्रयोग में लाने की आवष्यकता है। लेकिन उन्होंने इस सम्बंध में स्पष्ट किया कि जीएम फसलों को अच्छी तरह परीक्षण करने के बाद ही किसानों तक पहुंचाया जाए। डॉ. संधु ने पिछले कुछ वर्षों में हुए जलवायु परितर्वन को देखते हुए वर्षा आधारित क्षेत्रों के लिए सरसों की नई किस्मों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि रोगों व कीटों का प्रभावी नियंत्रण तथा सिंचाई जल के सही प्रयोग पर वैज्ञानिकों को प्रभावी कार्य योजना बनानी चाहिए। इस कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक डॉ. बी.बी.सिंह ने कहा कि वर्तमान में राई सरसों का उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक उपज वाली हाईब्रिड किस्मों का विकास किया जाना चाहिए। उन्होंने उन्नत किस्मों से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए संबंधित प्रभावी शस्य तननीकों के विकास की आवश्यक्ता पर बल दिया। कार्यशााला में सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने राई-सरसों अनुसंधान की गत वर्ष की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए भविष्य की अनुसंधान योजनाओं के बारे में चर्चा की। वेटरिनरी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. केएम एल पाठक ने कहा कि फसल आधारित अनुसंधान संस्थानों को पशु आधारित संस्थानों के साथ मिल कर किसानों के लिए एकीकृत कृषि का मॉडल तैयार करना चाहिए ताकि किसानों की आय बढ़े। उन्होंने विभिन्न संस्थानों के साथ मिल कर उन्नत किस्मों का अधिकतम गणवत्ता युक्त बीज उत्पादन करने की आवश्यक्ता पर जोर दिया ताकि किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज सही दाम पर मिल सके। वेटरिनरी के निदेशक प्रसार डॉ. सर्वजीत ने वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापन करने हुए कहा कि ग्लोवल वार्मिंग की परिस्थितियों के अनुरूप वैज्ञानिक अनुसंधान की कार्ययोजनाओं पर काम करें। कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से आए करीब 200 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं, जो कि अपने-अपने राज्यों में किए गए सरसों अनुसंधानों की चर्चा करेंगे। साथ ही आगामी वर्ष की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। इस अवसर पर 4 तकनीकी पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

साथ ही विकसित तकनीकों के प्रभावों को किसानों के खेतों पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए ताकि सभी हित धारकों में उनका विश्वास बढ़े। उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि उपज में अंतर के लिए जिम्मेदार कारकों को चिन्हित करके उसी अनुरूप अनुसंधान की प्राथमिकता निर्धारित करे।

राष्ट्रीय स्वरूप 7 अगस्त 2016

कृषि अनुसंधानों के परिणाम खेतों तक पहुँचे-डॉ. जे.एस.सन्धू

सरसों उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्यवार रणनीति बनानी चाहिए

जलवायु परिवर्तन के दौर में जीएम तकनीक समय की जरूरत

मथुरा। भारतीय कृषि अनसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जे.एस.सन्धू ने कहा कि अनुसंधान संस्थाओं द्वारा कृषि की विभिन्न परिस्थितियों के लिए तकनीकियों का विकास किया गया है। इन तकनीकों का समय पर किसानों के पास पहुंचना महत्वपूर्ण है। लेकिन जानकारी के अभाव और बीजों की उपलब्धता पूरी न होने के कारण किसान अभी भी पुरानी किस्में काम में ले रहे हैं। इस लिए किसानों द्वारा पुरानी किस्मों की बजाय नई रोग एवं प्रतिकूल मौसम अवरोधी किस्मों को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश में दालों के साथ साथ तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। किसानों की मेहनत से देश को खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता मिली और आज देश इनका निर्यात भी करता है। किसानों को वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर तिलहनों का उत्पादन भी बढाना होगा ताकि उसमें भी आत्म निर्भरता प्राप्त हो सके। डॉ. जे.एस. संधू सोमवार को वेटरिनरी विश्वविद्यालय मथुरा के किसान भवन आडिटोरियाम में सरसों अनुसंधान निदेशालय, (भरतपुर) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की २३ वीं कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि परम्परागत क्षेत्रों के अतिरिक्त पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में गैर परम्परागत क्षेत्रों विशेष पर धान के बाद खाली रहने वाले खेतों में लगाए गए सरसों के प्रदर्शनों में अच्छी उपज प्राप्त हुई है। इस कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिद. शक डॉ. बी.बी.सिंह ने कहा कि वर्तमान में राई सरसों का उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक उपज वाली हाईब्रिड किस्मों का विकास किया जाना चाहिए। कार्यशाला में सरसों अनुसंधान निदेशालय के निद. शक डॉ. धीरज सिंह ने राई-सरसों अनुसंधान की गत वर्ष की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए भविष्य की अनुसंधान योजनाओं के बारे में चर्चा की। वेटरिनरी विश्व. विद्यालय के कुलपति डॉ. केएम एल पाठक ने कहा कि फसल आधारित अनुसंधान संस्थानों को पशु आधारित संस्थानों के साथ मिल कर किसानों के लिए एकीकृत कृषि का मॉडल तैयार करना चाहिए ताकि किसानों की आय बढ़े। उन्होंने विभिन्न संस्थानों के साथ मिल कर उन्नत किस्मों का अधिकतम गणवत्ता युक्त बीज उत्पादन करने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज सही दाम पर मिल सके। वेटरिनरी के निदेशक प्रसार डॉ. सर्वजीत ने वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापन करने हुए कहा कि ग्लोवल वार्मिंग की परिस्थितियों के अनुरूप वैज्ञानिक अनुसंधान की कार्ययोजनाओं पर काम करें। कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों से आए करीब २०० वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं, जो कि अपने-अपने राज्यों में किए गए सरसों अनुसंधानों की चर्चा करेंगे। साथ ही आगामी वर्ष की कार्ययोजना तैयार की जाएगी। इस अवसर पर ४ तकनीकी पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

आज 7 अगस्त 2016